साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

मई 2013 वर्ष 18, अंक 5

पुण्य तिथि, 27 मई पर स्मरण

नेहरू : एक लेखक

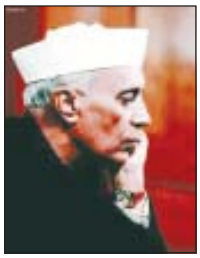

पं. जवाहरलाल नेहरू, देश के प्रथम प्रधानमंत्री, को हम एक राजनेता के रूप में जानते हैं। लेकिन वे एक प्रतिभाशाली लेखक भी थे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, अधिकतर जेल में रहते हुए। 1927 में पहली पुस्तक सोवियत रूस पर लिखी। दूसरी पुस्तक, जो वस्तुतः पुत्री इंदिरा को लिखे पत्र थे, 1931 में हिंदी अनुवाद के रूप में प्रकाशित हुई। पुस्तक का नाम रखा गया—'पिता के पत्र पुत्री के नाम'। नेहरू जी 1928 में इलाहाबाद में थे और पुत्री इंदिरा मंसूरी में। इंदिरा तब 10 वर्ष की थीं। इन पत्रों में उन्होंने इंदिरा को बताया कि पृथ्वी की शुरुआत कैसे हुई, मनुष्य ने अपने आप को कैसे समझा-पहचाना, आदि।

'विश्व इतिहास की झलक', 'आत्मकथा' तथा 'भारत की खोज' पुस्तकें 1930 से 1944 के बीच जेल में लिखी गईं। ये पुस्तकें आत्मकथात्मक शैली में हैं। 'विश्व इतिहास...' में पुत्री इंदिरा को लिखे गए 176 पत्र हैं। 'आत्मकथा' 1936 में लंदन में प्रकाशित हुई। इसका 31 भाषाओं में अनुवाद हुआ। 'भारत : आज और कल' उनकी अंतिम पुस्तक मानी जाती है (1959)। 'भारत की खोज' पुस्तक के अंतिम अनुच्छेद में 'कल का विश्व' नामक अध्याय में भविष्य की चर्चा की गई है जब मानव जाति की अंतरराष्ट्रीय संस्कृतियाँ मिलकर एक हो जाएँगी।

कर्तव्यग्रहण

मेरा काम कौन ग्रहण करेगा? संध्या के सूर्य ने पूछा।
सुनकर संसार चुप रहा तस्वीर की तरह।
मिट्टी का दीया था, उसने कहा, प्रभो,
जितनी मेरी शक्ति है, मैं उतना करूँगा।

—रवींद्रनाथ टैगोर

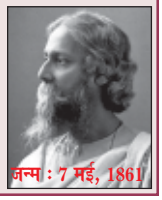

जन्म : 7 मई, 1861

श्रमदिवस, 1 मई के अवसर पर

तोड़ती पत्थर

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर—
वह तोड़ती पत्थर

कोई न छायादार
पेड़, वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार;
सामने तरु—मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;
गरमियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,

प्रायः हुई दुपहर,
वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा—
''मैं तोड़ती पत्थर।''

'अनामिका' संग्रह से

जन्मदिन स्मरण : 7 मई

मेरा भारत जागे
जहाँ मस्तिष्क निर्भीक हो
और मस्तक ऊँचा रहे।
जहाँ ज्ञान स्वतंत्र हो,
जहाँ अपने घरेलू स्वार्थों की दीवारों से
विश्व टुकड़ों में न बँट जाए।
जहाँ शब्द सत्य की गहराई से उभरे,
जहाँ अनवरत परिश्रम से हमारे हाथ
सिद्धि की ओर बढ़ते रहें।
जहाँ बुरे संस्कारों के रेगिस्तान में,
हमारे विवेक का झरना सूख न जाए,
जहाँ मन, वचन, कर्म की उदारता से
हमारा मस्तिष्क सदा अग्रसर रहे।
हे प्रभु, इस स्वतंत्रता के स्वर्ग में,
मेरा देश जाग्रत हो सके।

रवींद्रनाथ टैगोर
('गीतांजलि' के पद का भावानुवाद)

लघुकथा

दादी-नानी

राजेंद्र जोशी, भोपाल, म.प्र.

एक युवक चिंता की मुद्रा में सिर पर हाथ रखकर बैठे-बैठे सोच रहा था–'आज दादी इस दुनिया में नहीं है, नानी भी जीवित नहीं है। दादी को उसकी दादी ने और नानी को उसकी नानी ने और उन्हें उनकी भी दादी-नानियों ने जो पारंपरिक संस्कार दिए थे, जीवन जीने के, अच्छे रहन-सहन के, एक-दूसरे से मेलजोल के जो गुण सिखाए थे, वे अब कहाँ से सीखूँ? बचपन में दादी-नानी ने किस्से-कहानियों, गीत-भजनों के जरिये मुझे जो ज्ञान दिया था, उन्हें अब कहाँ से प्राप्त करूँ?'

तभी, युवक को चिंतामग्न देखकर घर की दीवार से सटे एक रैक में रखी पुस्तकों के बीच से, धूलभरे एक कपड़े के बस्ते में दादी के हाथ की रखी पुरानी किताबें बोल पड़ीं–''बेटा, निराश मत हो, चिंता मत कर, बस्ते की धूल झाड़, पुराने कागजों में छपी हम पुस्तकों को बाहर निकाल, नई किताबों के साथ हमारा भी सम्मान कर, पढ़! हममें वे सब गुण हैं, जो दादी-नानियों में थे। हम ही तुम्हारी दादी हैं, हम ही तुम्हारी नानी हैं!''

युवक ने बस्ता खोला, धूल झाड़ी, किताबों को हाथ में लिया, पढ़ने लगा। उसे एहसास होने लगा, वह दादी-नानी की गोद में बैठा है और वह मानवीय संस्कारों की संपदा से समृद्ध है।

कहानी मई दिवस की

पहली मई का दिन समूचे विश्व में 'मई दिवस' के रूप में मनाया जाता है। मई दिवस यानी मजदूरों का दिन। काम करने वाले, खासकर श्रम से जुड़े लोगों के लिए तो यह एक सालाना जलसा ही है इसलिए इसे 'श्रम दिवस' अथवा 'मजदूर दिवस' भी कहा जाता है। इस दिवस के आयोजन के पीछे मजदूरों के लंबे संघर्ष एवं आंदोलन और सफलता की लंबी दास्तान है। कहानी 19वीं सदी की है जब अमेरिका में मजदूरों पर गोलियाँ चलाई गई थीं और बड़ी संख्या में निर्दोष मजदूर मारे गए थे। इस घटना के फलस्वरूप मजदूरों के काम के निश्चित घंटों की माँग पूरी हुई थी तब से उसी संघर्ष और मजदूरों के बलिदान की याद में पूरे विश्व में मई दिवस मनाया जाने लगा।

इस संघर्ष की शुरुआत 1838 में हुई थी। उन दिनों अमेरिका सहित यूरोपीय देशों में भी मजदूरों के लिए काम का समय निर्धारित नहीं था। 1866 में अमेरिका की नेशनल लेबर यूनियन ने पहली बार मजदूरों के लिए दिन में आठ घंटे काम की माँग रखी। इस माँग ने अन्य देशों में भी जोर पकड़ा। 1886 को 3 मई के दिन शिकागो शहर में हजारों मजदूरों पर गोलियाँ चलाई गईं, जिनमें अनेक मजदूर मारे गए। अंतरराष्ट्रीय समाजवादी मजदूर ने 1 मई, 1890 को विश्व भर में 'मजदूर दिवस' मनाने का आह्वान किया। तभी से मई दिवस की परंपरा शुरू हुई। भारत में यह दिवस 1926 से मनाया जाता है।

जन्मदिन, 22 मई पर विशेष

राजा राममोहन राय और शिक्षा

राजा राममोहन राय चाहते थे कि भारत में शिक्षा वैज्ञानिक ढंग से दी जाए, ताकि लोग अंधविश्वास और अज्ञान को दूर करें और ज्ञान के प्रकाश की ओर अग्रसर हों। सन् 1816 में जब हिंदू कॉलेज की स्थापना हो रही थी उन्होंने डेविड हेयर और अन्य लोगों का साथ दिया। 1822 में राममोहन ने अपने खर्चे से अद्वैतवादी संस्था के तत्वावधान में एक हाई इंगलिश स्कूल आरंभ किया। इस स्कूल में बंगला भाषा में विज्ञान पढ़ाया जाता था। उन्होंने बंगला भाषा में व्याकरण, भूगोल सहित अनेक विधाओं में पुस्तकें लिखीं। बंगला गद्य के भी वे जनक माने जाते हैं। 1821 में उन्होंने बंगला साप्ताहिक 'संवाद कौमुदी' का प्रकाशन शुरू किया।

अबला नारी पढ़ना सीख
हक की खातिर लड़ना सीख
अपना रस्ता आप बना
अपनी किस्मत गढ़ना सीख
तोड़ रूढ़ियों की जंजीर
मुक्त गगन में उड़ना सीख
शिक्षा का संदेशा लेकर
सबसे आगे चलना सीख।

प्रेमकुमार गौतम, झाँसी, उ.प्र.

जला मैं भी पध लूँ!

बेटी
शिक्षा पाकर
करे नाम रोशन
हर क्षेत्र में।

सुगनचंद्र जैन नलिन, गुना, म.प्र.

राष्ट्रीय प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है
हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं
मुझे अपना देश प्राणों से भी प्यारा है
इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर मुझे गर्व है
हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का सदा प्रयत्न करते रहेंगे
मैं अपने माता-पिता, शिक्षकों एवं गुरुजनों का सदा आदर करूँगा
और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करूँगा
मैं अपने देश और देशवासियों के प्रति वफादार रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ
उनके कल्याण और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है!
जयहिंद!

राष्ट्रीय एकता दिवस, 13 मई के अवसर पर

विश्व रेड क्रॉस दिवस 8 मई

हम आपको नमन करते हैं!

संदर्भ : जन्म दिवस, 5 मई

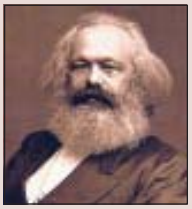

कार्ल मार्क्स (1818)

यहूदी परिवार में जर्मनी में जन्मे। 'दुनिया के मजदूरो, एक हो!' का नारा दिया था।

संदर्भ : जन्म दिवस, 9 मई

गोपाल कृष्ण गोखले (1866)

गाँधी जी इन्हें अपना गुरु मानते थे। साक्षरता के प्रति बेहद आग्रही और आशान्वित थे।

संदर्भ : जन्म दिवस, 12 मई

फ्लोरेंस नाइटिंगेल (1820)

आधुनिक नर्सिंग आंदोलन की जन्मदाता। 'द लेडी विद् द लैंप' कहलाती हैं।

संदर्भ : पुण्य तिथि, 3 मई

डॉ. जाकिर हुसैन (1969)

देश के तीसरे राष्ट्रपति (13 मई, 1967 से 3 मई, 1969 तक)। एक महान शिक्षाविद्।

मदर्स डे, 12 मई के विशेष संदर्भ में दो कविताएँ

लौटना माँ के पास

राजेंद्र उपाध्याय

माँ के पास लौटता हूँ बार-बार
बगैर किसी आमंत्रण के
कभी भी किसी भी वक्त-बेवक्त
कभी कुछ खाए, कभी कुछ भी न खाए
कभी-कभी तो ऐसे भी लौटता हूँ जैसे
बरसों से कुछ भी न खाया हो।

खाकर भी गया हूँ
तो भी खाकर आया हूँ
पहनकर गया हूँ
तो भी पहनकर आया हूँ।

माँ के पास गरीबी में भी
मेरे लिए रहा है कुछ-न-कुछ
मूढ़ी हो या भुनी हुई हरी मिर्च
वही रही मेरे लिए अमृत।

जाता हूँ कई बार पहनकर सूट-बूट
और पाता हूँ जैसे माँ के सामने कुछ भी नहीं पहन रखा है
वैसे ही हूँ जैसे उसने मुझे पैदा किया होगा।

अकसर सपने में नहलाती है वह
जब धूल में लथपथ धूप में लाल होकर गया हूँ
मलहम लगा रही है मेरी खरोंचों पर जहाँ-तहाँ
यह देह जितनी मेरी उतनी ही माँ की है।

माँ के पास गया हूँ अगहन में, माघ में, भादों में, जाड़े में,
बरसात में, जनवरी में, जुलाई में
कभी एकदम भोर में, तो कभी सरेशाम
गर्मियों में तपती छत पर ठंडे तकिये की तरह
माँ का हाथ है सिर पर
सर्दियों में वह गरम रजाई
और मैं वही बचपन का लड़का, जिसका कोई नाम नहीं।

नई दिल्ली

मई माह का दूसरा रविवार मदर्स डे के रूप में मनाया जाता है।

माँ है मंत्र समान

कमलेश व्यास 'कमल'

माँ गरमी में छाँव-सी, औ' सरदी में धूप
बारिश में छतरी बने, बदले ममता रूप।

सोया माँ के अंक में, किया दूध का पान
काया तब तेरी बनी, उत्तम स्वस्थ सुजान।

माँ का तन गीला किया, जब थे हम नादान
अब आँखें गीली करें, कैसे हम इंसान!

सदा पिता के कोप में, माँ बनती दीवार
बच्चों तक आने न दे, झेले माँ हर वार।

माँ कुरान की आयतें, माँ गीता के श्लोक
समाधान संकट हरे, हर बाधा की रोक।

गुरुबानी गुरुग्रंथ की, माँ है गूँज अजान
है वाणी वो चर्च की, माँ है मंत्र समान।

माँ होती संतान की, पूँजी वो अनमोल
थी तब तो समझे नहीं, अब जाना है मोल।

उज्जैन, म.प्र.

ज्यों सूरज धरती पर हर दिन
किरण-धार बन झरता
ज्यों चंदा तम का अंधियारा
उजियाले से हरता
भर देती पुस्तक वैसे ही
मन में बहुल प्रकाश
खुल जाते हैं द्वार ज्ञान के
मिट जाते भ्रम-पाश।

सुकीर्ति भटनागर, पटियाला, पंजाब

नेशनल बुक ट्रस्ट के नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत नई पुस्तकें

दीनू से दीनानाथ पृष्ठ 16 ₹ 11.00
राजेश कुमार साहू ISBN 978-81-237-6667-6
दीनू की माँ का निधन हो गया। अंतिम संस्कार के लिए लकड़ी की तलाश में वह सारा गाँव घूम आया, तब कहीं जाकर उसे लकड़ी मिली। उसने महसूस किया, गाँव में पेड़-पौधों की अंधाधुंध कटाई से यह स्थिति आई है। वह गाँव के मुखिया से अपनी बात रखता है। उन्हें बताता है कि गाँव में पेड़-पौधे लगाना जरूरी है। पशुपालन की भी योजना बनी। दीनू अब दीनानाथ बन गया था।

गाँव का बेटा पृष्ठ 20 ₹ 13.00
राकेश चक्र ISBN 978-81-237-6627-0
किशन 12वीं की पढ़ाई के बाद आयुर्वेदिक डॉक्टर बनने के लिए परीक्षा देता है और पास कर जाता है, लेकिन वह नौकरी नहीं करता। कस्बे में ही अस्पताल खोलकर गाँववालों की स्वास्थ्य-सेवा में लगा रहता। वह नशामुक्ति, साफ पानी, सामान्य स्वास्थ्य, खान-पान में किन बातों का ध्यान रखना है आदि बातें गाँववालों को बताता है। गाँववालों की बुरी आदतें वह छुड़ाने की कोशिश करता है। पूरा गाँव उससे खुश है।

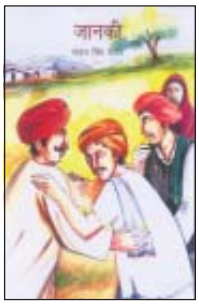

जानकी पृष्ठ 20 ₹ 12.00
संजय सिंह राठौर ISBN 978-81-237-6691-2
कम उम्र में शादी जी का जंजाल बनती है, शादी की उम्र में ही बच्चों की शादी करनी चाहिए, इसी विषय पर केंद्रित है यह रचना। अगर बच्चे पढ़ना चाहते हैं तो माँ-बाप को चाहिए कि उनको पढ़ाएँ, ताकि वे भी समय के साथ मिलकर चल सकें।

गुटखाराम पृष्ठ 16 ₹ 11.00
गिरीश पंकज ISBN 978-81-237-6690-4
यह कहानी तोताराम की है, जो गुटखा खाने का बहुत शौकीन था। एक दिन गाँव में डॉक्टर आए। उन्होंने बतलाया कि इसके सेवन करने से भयंकर परिणाम हो सकते हैं। कई चित्रों को देखकर उसकी हालत पतली हो गई और उसको बात समझ में आ गई। अब गुटखाराम सबको बताता फिरता है कि इसका सेवन करना कितना खतरनाक है।

भूत आदमी पृष्ठ 16 ₹ 11.00
लियाकत खोक्कर साहिल
ISBN 978-81-237-6689-8
सच में देखा जाए तो भूत होता नहीं है, वास्तव में सुखदेव और मनसुख दोनों ट्रक चलाते थे। उनका सामना एक 'भूत' से हुआ और फिर क्या हुआ, यह जानने के लिए कहानी पढ़ना बेहद जरूरी है। यह विशुद्ध एक हास्य कहानी है जो नवसाक्षरों को बेहद पसंद आएगी।

मोबाइल देवता पृष्ठ 18 ₹ 12.00
प्रेम जनमेजय ISBN 978-81-237-6692-8
नई तकनीक जब अपना पंख पसारती है तो थोड़ी दिक्कत तो होती ही है, लेकिन समझना चाहिए कि सुविधा को अपनाओ, उसके दास मत बनो। यह एक रोचक कथा है जो एक वरिष्ठ व्यंग्यकार ने लिखी है।

नाम वाले चाचा पृष्ठ 20 ₹ 12.00
आशीष दशोत्तर ISBN 978-81-237-6651-5
बरकत की पत्नी के गुजर जाने के बाद असलम ने कुछ समय तो बूढ़े पिता को सहारा दिया, फिर उसको घर से बाहर निकाल दिया। वह अपने घोड़े के साथ घूमा करता, लेकिन गाँव के मास्टर के समझाने पर उसने पढ़ना शुरू कर दिया तो उसकी किस्मत बदल गई। अब सब उसका सम्मान करने लगे थे, बेटा भी पिता को घर वापिस ले आया।

सुमन की जीत पृष्ठ 16 ₹ 11.00
राजुरकर राज ISBN 978-81-237-6650-8
यह कहानी लिंग परीक्षण पर केंद्रित है कि कैसे गाँव के भोले-भाले लोग ठगे जाते हैं, यह पहचान करना कानूनन अपराध भी है। कहानी बताती है कि आज के जमाने में लड़का या लड़की दोनों बराबर हैं।

जुम्मन काका पृष्ठ 32 ₹ 14.00
कामतानाथ ISBN 978-81-237-6647-8
जुम्मन काका मरकर भी नहीं मरे। गाँववाले उनकी मजार पर जाकर अपनी हर दुआ पूरी हो जाने की उम्मीद करते हैं। सांप्रदायिक सौहार्द के मिसाल थे जुम्मन काका।

किताबें, अलादीन का चिराग
किताबें, भोर की, राग विहाग
संगम में डुबकी के जैसे
किताबें, पावन कुंभ प्रयाग।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

पढ़ना बहुत जरूरी है
हर कमी होती पूरी है
पढ़ लो, पढ़ लो, पढ़ लो
नहीं कोई मजबूरी है।

प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

लड़कियाँ जब ठान लेतीं स्वयं मन में
हौसलों से छेद कर देतीं गगन में
सागरों पर भी विजय उनको मिली है
लाँघ लेती हैं हिमालय एक क्षण में।

डॉ. राकेश अग्रवाल, हापुड़, उ.प्र.

अधिक अनुभव, अधिक मुसीबतें सहन करना और अधिक अध्ययन, यही विद्वता के तीन स्तंभ हैं।

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **सा. सं. : अप्रैल 2013 : साक्षरता संवाद** बिना किसी अंतराल के मिलता रहता है। थोड़े में ढेर सारी बातें कह देने की कला कोई इस पत्रिका से सीखे। साक्षर बनाने की छोटी-छोटी कहानियाँ कितनी प्रेरणा देती हैं कौन जाने! पुस्तकों की उपयोगिता एक श्रेष्ठ नागरिक बनने में बहुत अधिक है।

पुस्तक तो ज्ञान का कोश होती है, संस्कार की आधारशिला होती है, अपने अतीत को समझने की सबसे नायाब वस्तु होती है। पुस्तक-पोथी में निमग्न मनुष्य ज्ञानवान तो होता ही है उसके साथ कर्म, व्यवहार और संस्कार समकालीन पीढ़ी को एक नया प्रकाश देते हैं। प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की पुस्तक केंद्रित कविता बहुत ही रमणीय पाठ लेकर **सा. सं.** में आई है। इस प्रकार की कविताएँ पुस्तक के प्रति प्रेरणा भर देती हैं।

साक्षरता का अभियान अभी देश के स्वतंत्र हुए 66 वर्ष बीत जाने पर भी चल रहा है–यह एक आजाद देश के लिए बड़ा प्रश्न है। इस लज्जा से बाहर आने के लिए हमें **सा. सं.** के समाचारों व प्रचारित साहित्य पर विशेष ध्यान देना होगा।

डॉ. उदय प्रताप सिंह, गाजीपुर, उ.प्र.

☐ **सा. सं. : मार्च 2013 :** हर अगला अंक पहले से बेहतर, रोचक और ज्ञान से संपृक्त मिलता है। मार्च अंक महिला दिवस पर केंद्रित था और दिवस के अनुरूप सुंदर, उपयोगी रचनाएँ भी। 'पूरा जिला स्त्रियों की कमान में' शीर्षक खबर प्रेरक थी।

दुर्गा प्रसाद शर्मा, बुलंदशहर, उ.प्र.

☐ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) पर दी गई काव्य रचनाएँ एवं अन्य सामग्री उपयोगी व रोचक हैं। अगले अंक की प्रतीक्षा बनी रहती है। **सार्थ,** धरमंगदपुर, कानपुर नगर, उ.प्र.

☐ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रस्तुति अच्छी लगी। संदर्भित कविताओं ने प्रभावित किया। नवसाक्षरों के लिए पृष्ठ उपादेय हैं। कुंती की कविता ने प्रभावित किया।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

☐ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर अंक में मानव समाज की प्रोन्नति में नारी की भूमिका को उजागर करती कई उत्कृष्ट कविताएँ शब्दांकित हुई हैं। विशेष रूप से पूनम की 'नारी' तथा कमला भसीन की 'इरादे कर बुलंद' अत्यंत प्रभावी बन पड़ी हैं। आपकी यह पत्रिका 'देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर' की उक्ति को चरितार्थ करती है। छोटे-से कलेवर में इतनी चुटीली व मर्मस्पर्शी कविताओं व लेखों का संकलन प्रशंसनीय है।

डॉ. दयानिधि, बरगढ़, ओड़िशा

☐ अंतिम पृष्ठ पर कुंती की कविता सार्थक, सटीक थी। प्रयास अच्छा है। **प्रेम कुमार गौतम,** झाँसी, उ.प्र.

☐ सा. सं. के अंकों को गंभीरता से पढ़ता हूँ। प्रत्येक अंक नई पीढ़ी को जीवन की चुनौतियों का मुकाबला करने की दिशा में उचित मार्गदर्शन दे रहा है। **राजेंद्र जोशी,** भोपाल, म.प्र.

☐ निरक्षरता दूर करने का उपाय : हर शिक्षित व्यक्ति कम-से-कम एक निरक्षर को साक्षर बनाए। **किशन लाल शर्मा,** आगरा, उ.प्र.

☐ खूब पढ़ो
खूब पढ़ाओ
स्वयं और सबको
उन्नति-पथ दिखाओ। **डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा,** ग्वालियर, म.प्र.

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्‌बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

शिक्षा की विशेषता

विनोद चंद्र पाण्डेय 'विनोद'

शिक्षा का महत्व है भारी
शिक्षा है विशेष गुणकारी
शिक्षा अज्ञानता मिटाती
शिक्षा ज्ञान-प्रदीप जलाती।

शिक्षा है सबको सुख देती
शिक्षा सबका दुख हर लेती
करती है कल्याण सभी का
करे कष्ट से त्राण सभी का।

करती दूर निरक्षरता है
लाती सबमें साक्षरता है
हस्ताक्षर करना सिखलाती
नई प्रगति का पाठ पढ़ाती।

जो भी शिक्षा को अपनाता
जग में उन्नति करता जाता
नहीं कभी वह धोखा खाता
बन जाता निज भाग्य-विधाता।

लखनऊ, उ.प्र.

मुक्तक

डॉ. देवेन्द्र आर्य

वक्त जगने का, कहीं तुम सो न जाना
तुझे ही तो भोर को, घर-घर सजाना
यह अँधेरा चार पल भी क्या टिकेगा
ज्ञान का यह दीप तुझको ही जलाना।

ज्ञान का दीपक, चलो, घर-घर जलाएँ
खुद पढ़ें, पर साथ औरों को पढ़ाएँ
तुम चलो तो पंथ सब खुद ही मिलेंगे
हौसला हर लक्ष्य का मन में सजाएँ।

गाजियाबाद, उ.प्र.

जिसने खोली
खिड़कियाँ अपनी
सदा उसी ने पाया
दिपदिपाते
सूरज को सम्मुख
सौभाग्य मुस्कुराता।

डॉ. रामनिवास 'मानव', हिसार, हरियाणा

कोई व्यक्ति यदि सीखने का प्रयास नहीं करता है तो वह बैल की तरह बस उम्रदराज होता जाता है। उसका शरीर तो बढ़ता किंतु उसकी बुद्धिमत्ता बिलकुल नहीं बढ़ती।

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/5/2013

प्रेरणा

गाँव-गाँव में पुस्तकालय

मन में कुछ करने का जज्बा हो तो असंभव कुछ भी नहीं। उत्तर प्रदेश में सरकारी नौकरी में रहते हुए श्री शिवसागर दुबे की कहानी उनके शिक्षा के प्रति उत्साह एवं जुनून की भी कहानी है। वे शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए पुस्तकालय को महत्वपूर्ण माध्यम मानते हैं और प्रदेश में पुस्तकालय-स्थापना के कार्य में लगे हुए हैं। भदोही जनपद में अपने पदस्थापन के दौरान, औराई तहसील में वे चार पुस्तकालयों की स्थापना करवा चुके हैं। श्री दुबे का मानना है कि आम जन-भागीदारी से जो पुस्तकालय बनेगा, उसके जीवित और सक्रिय रहने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि लोग इसमें 'अपनापन' महसूस करेंगे। इसी कारण उन्होंने ऐसे पुस्तकालय का नाम 'अपना पुस्तकालय' रखा है।

वे जहाँ भी जाते हैं अपनी जीप में पत्रिकाएँ लेकर चलते हैं। रास्ते में जहाँ कहीं भी ताश खेलते युवा उन्हें दिखते हैं उन्हें पत्रिका देकर पढ़ने को प्रोत्साहित करते हैं। इन दिनों वे सकलडीहा तहसील के ग्राम पंचायतों में पुस्तकालय-स्थापना के कार्य में लगे हुए हैं। फर्नीचर व किताबों के लिए वे आम लोगों से ही पैसे इकट्ठे कर रहे हैं। एक-एक रुपये का हिसाब रखा जाता है। श्री दुबे के इस कार्य से युवाओं में पढ़ाई-लिखाई के प्रति रुचि पैदा हो रही है।

पढ़ना

प्रो. शरद नारायण खरे

पढ़ना ही है जिंदगी
पढ़ना ही अभिमान
पढ़ने से हमको मिले
कदम-कदम सम्मान।
पढ़ना है सबसे सुखद
पढ़ना दीप समान
पढ़ने से आलोक है
पढ़ना देव समान।
पढ़ने से बढ़ता मनुज
सब कुछ हो आसान
पढ़ने से हर इक बने
सचमुच में इनसान।

मंडला, म.प्र.

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070